

2691



Handwritten numbers and symbols, possibly a calculation or list.

Handwritten number 1.

Handwritten numbers 36 and 48.

Handwritten numbers 24 and 24.

Handwritten numbers 211 and 2.

Large handwritten signature or name in Devanagari script.

२६८ नमः श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥
 वनवधक मलाय सम्य कला ना वला मन क वाय न न सा है २ ॥ व
 न्द रुवा हि स म गे स का विधी य कि स य न म रु व य क य सा द न
 म मा य ह न स र व ॥ श्री म न व ड का का य डा वि ना व क व र्ति ॥ वि
 व ह न वि का ना य का ना य ड व ना न म ॥ या व ना व ड का की च वि

२६९ कला व न ना रु ॥ ला का रु य ड व हि ना ना रु कि शा न म ड म दा
 ॥ म रि शा का व ध म ना ना ना व य रु ॥ श्री का व म ड यं ल
 रु का व रु रु म ना व का व म य ग कं व र्द क का व ध क वि सि कं ॥
 ल र्ध स ला ड व ध रु का ॥ मू क व धु दि रु रु स म व ना ना नं ला व य रु ॥
 रु द नू क व ॥ ध नं द कि ध रु म मू का व ध सूर्य म डु लं वा म रु रु म

2691

मानियाँ ॥ ॐ आत्मानमवदहं ॥ मिल सकथा ॥ ॥ कका खद ॥ ३

कदय प्रकाशवदमधुवापरिहृष्टहं कावं आकाशं वक ॥
कावं शुद्ध हृष्ट कावकं ॥ आत्मिका लिपि लिख्य शुद्ध वक ॥
सुवर्णमचार्य कदक वपरितक वक यमवाक नाक विष्णु धिष्ट
हृष्ट ॥ ॥ रूप सं ॥ धवे सचन वदनात् ॥ धवक हृष्ट सचन सं

धपम नृशधन संत्ता वत् ॥ धवक वाक विलसत सं ॥ धवक सत्
सवकथा गतत् ॥ श्री हवक वक ॥ वक या माह वकी ॥ धाका यद
वकी ॥ धाका यदी या वकी वक य वा गवकी ॥ स्य ॥ धाका स्य व
की ॥ सर्वा या कन धी धर्य वकी ॥ पृथिवी धातु पाकनी ॥ आय धातु
माचिनी ॥ कजा धातु वाकर्षनी ॥ वायु धातु पमनृशधनी आका

काव्ये चरधारा कर्तुं मये ह सिविलाय ॥ ॐ भद्र नीव नीव वः
ऊय न्ववदं ॥ ॐ वज्रया काच दूवदं ॥ ॐ वज्रपंगल दूवदं ॥ ॐ
वज्रविकान दूवदं ॥ ॐ वज्रसच गाल जों मं जों ॥ ॐ वज्रकालानः
वार्क दू ॥ दू काच जा ह दिगया काच समीकृप निव धिनां नू
युदिविघ्नान् दूदय किल य ह ॥ ॐ घ घा घा ट य २ सर्व विघ्नान्

दूदृष्ट ॥ ॐ कीलय २ सर्व पापान् दूदृष्ट ॥ ॐ वज्रकीलय वज्रध्वजः
श्रासपय कि सर्व विघ्न विनायकानां काय वाक् विरुवजान्
कीलय दूदृष्ट ॥ ॐ वज्रसंगल वज्रकीलय श्राकाटय २ दूदृष्ट ॥
कि निर्विघ्नो हावय ह ४ क क २ स्वदृष्ट य स्थ दू काच विभक्ति ४ क ग द
ध कृत्वा प्रकृति मृदुवन गला क य ह मृतादि सं सिद्धि धीवज्र सं

स्वर्गं गवर्गं ह गवर्गं समापन्नं समाधुतं यं पञ्चकूककाद्वि
जनभिः मालाहि वा रुषा लूनवक माका नदरवा दद्या अहि मख
महि संपूय समरु समय मधुलं प्रविश्य समवसि कय मनामः
यिहि पूजादवी हि य पूजयन् ॥ हं श्रीवज्र हन्व क पवस्त्वा वायः
पायं मूर्ध्ना च मनं प्राक् मधं पश्चिद्वा हा ॥ ज हं वै हं ॥

॥ ओं श्रीवज्र हन्व क हं हं हं जाकि नीजाल संभवं स्वाहा ॥ ओं श्रीव
हं हं हं ॥ ओं ओं ओं सर्ववज्र जाकि नीयवज्र वर्धनीयवज्र वेवाचः
नीय हं हं हं स्वाहा ॥ मध्वस ॥ ओं जाकि नीय हं हं हं ॥ ओं वा म हं हं
हं ॥ ओं स्वधुवा हं हं हं ॥ ओं वृषिनीय हं हं हं ॥ ओं वा विचिक्ता मृक
हा ॥ हं हं हं ॥ ४ ॥ ओं काका हं हं हं ॥ ओं डलू का हं हं हं ॥

म्रागरा इति यन्मः॥ गायत्र्यन्तदया सिद्धो
रगाद्यस्यानघागुराः सेवतामसयो धीराः
सा श्रीयेवापुनायका १ मयाम्पदमा न त्रयि
इति प्रतिश्रुते ॥ सस्पृशते तेवगेना
मलिज्ञानसा श्री सनेः प्राथदोरुपमेव

नसाह वया व कु व चि त्वा स्त्री पुनर्व
शर्करी

मालातन २२१२
का जि वा कु २२२१२
रो पलतन २१

२३० नमः श्री गुरु सत्त्वाय नमः ॥ पञ्चमस्तुल्य विधि ॥ न क संथ कथं पं
 चसात्रि कलम मखन सधं मरु ॥ सूर्याय गुनमस्तुल्य पंचगव्य काथ सि
 क्रुत पादपूजा पंचमालिपूजा कंठापूजा महनिद्रय ॥ आदिकाथ म
 सुधियं किरुन सनाकुच समाधियाथ कलम मख सधं मरु थापिपूजा
 दवपूजा ॥ सिधालस्य गुनमस्तुल्य दन के मरु पूजा संताकुच विसर्जन ॥
 पंचगव्य विथ चत्तमस्तुल्य वाथ आह दाहास्वाम गुनयातलडा काथ अ
 र्घ्याय क वा क ॥ ३५ गुनच वना पच्छनाय पंचाहि र्वक नाराथ पूजा का
 मनाथ की गुनच वना कमल अर्घ्य प्रणिच्छाहा सखपाद पूजा दक

२३१ दंष्ट्र य ॥ खानक संहारना कण्ठचक्र सा लिं खित्वा इत्यादय कमला
 यलिव उहृय उपविष्ट भिष्य सपन्निकं चक्र ध्वज चूपं बिराज ॥ आ
 कर्षन पाशादि वज्र नावा मरु हे मोथ ॥ अश्वत्थना ॥ धाधिवज्र न वदनां
 जथा दन महा मरु ॥ ह गुनरु नाथ हाडी दा वां रुथा गरुपनि स्य वृद्ध
 पूरुपनि सु विद्या थं समापितान नाथ यष वज्र उदाहि म ॥ क्रिपनि
 रुचकायाथ रुकी च सं पवज्र आदि पं वि स्थ विष्ठा ह न ॥ वृद्धानां मरु
 थ कलु जगजानाथ वकीनां गुभी क वा क थ द रु क थ ध्व म स्य हि ॥ ह
 गुनरु नाथ हाडी ना थां रु था गरुपनि सं वृद्ध पूरुपनि रु ग थ अहि र्व

कविच अथ किमिदं उदकाहिक कविच विद्या हनधक सिध्य गुण्या
कपाथनायाका ॥ कीकनक ॥ थनक कथिल ठकथ ॥ प्रहाराय हलसा ॥
लनापेकथ ॥ वाक् ॥ कसथागरुष प्रहसमापन महाबाग रं प्रविहय
वैशाचन द्वाचनाक निव्यध्व वरुमार्गन भिगय कदवेदवी ॥ यममुखत
पवभिक सिध मुनिकि शुन्यताकले ॥ ह्वरु जाके दिह गृह सप्रह कोत्य
स्यताय सन्वव रूप ॥ स्ननसत्वातिरुमाहि विध ॥ पूनरुह मखा हिमहि
हि ॥ यमानि प्रह्यगगसमा पूरु किं कलाचनादिविद्या सहि न छदध्व
पताका वरुवादिन गीत नीश ॥ पूरु कनु मादि ह्यिहि कव किनया
वर्जिक बाधिविहामृग पूरु धिक कव ॥ संमिषापमानि ॥ ४४ ॥ मति

धिचमार्श्यागिनीगमगीयमान मंगजगीरुतावय ॥ थनप्रहिकविश
निपालाहाकि संमिषापिध ॥ ४५ ॥ मंगलयादि ॥ धमीरुमभाकि कचपुजा
नारुमंगलेरुवकुभाकि कचकवाय ॥ सधर्मीरुकाशुमंगलाय ॥ संघा
निशवा सुचदकि नीया ॥ यभीतिवास ॥ पुववागमानो ॥ रुमंगलेरुवकु
साकि कचकवाय ॥ ४६ ॥ किमंगजगाथा ॥ ॥ वाधिवरुनवधानो ॥ जथाद
नमहामह ममापितानसाथ ॥ यवकुददाहिम ॥ ॥ रुगुरुनाथ ॥ हलपा
लयापुभादे ॥ वासां वाधमजिया ॥ ॥ वातगु ॥ उदकाहिकलायधून ॥ आश
पायवाप्रहिक विह विद्याथमाल धकथिष्यगुण्या कं ॥ नापयान

माशानमूलपात्रभावनमधिकृतय ॥ तावता ॥ नृपहंता नाधिसिंहव
जवजाक्रात्यस्वहृदि नृपस्यानिरुह्य नमस्तु ॥ कीरुहं दृष्टा संप्रद्य ॥ थन
कीनृस्यत्वनके ॥ वाके ॥ महासुखवज्रसत्वाहिस्वकेन सर्वकथागतधिपति
ननदधमरुव ॥ अंगलरुचमसीखलखनहाय ॥ अहिखकत्यादि ॥ हंति
खपनिथ ॥ अहिखक शब्द गधिनधालसा स्वर्गमध्य पातालनेन मस्काव
तां कयापु ददामि सर्ववृक्षातां प्रिगु आनयंसेरुवा ॥ अहिखकसमस्त
कथागतया स्वतारुदन उत्पत्ति शयाद्यं गु ॥ थपिगु अहिखक कुमिरु
विश्वधूत ॥ पंचपहा पूजा ॥ पून अघ स्वता ॥ वाधिवज्रनवहानी यथापि

रुमहासह समापिगाननाथयवजाददाहिम ॥ हं नृहताथ वाधिव
जवद्वपु उपनिस्तु वियाथं जिपिं न कायाथयाम स्वाचभं सकट या अहि
धक जिमिरु विसविद्याह न थन मरुन पूयक ॥ तावता ॥ भिष्य आन
नसरुव नृपीन सनसत्त्व ग कीरुहं नरुष्टक कथागतदवी लिष्टकुरुवति
चिन्नमान रूपवजादिति रूपनीयमाने मंगलगी रं तावयता ॥ वजाधिपति
नमनेकं ॥ थप्यवष्टकनक वज्रादि घटि रं बलसकटं वज्रमहासुखरुच
सत्त्व रूपी पीवतथा गत मध्यस्थि ॥ भिष्य वज्रवहिनं सवध्या स्वामक
टं नृपतिवत्सम मध्यललाह पा ॥ र्धरुदधमधिपुष्टव यथाक्रमीम

[illegible][illegible]

गालं वायमदयावीगु उदकाहिखक पाजहिखक मकूठाहिखक वजा
 हिखक घटाहिखक थसकना वायधन आशमजाहिखक विमविद्या
 हस्त ॥ ममपिनातनास्था यमवजं ददाहिम ॥ हिमिषपनिथ अहिखक
 यावसंयार्कनमगडा लाथं कंसा अलश्या काधिश्या रुस्मश्या न
 चकस कटिनडा तिडा कृमिसे स्यातं न कंथ कादुकधलनपाशनि
 डा ॥ ॥ कीतन ॥ नमस्तुतुनमानम रुक्माहत्वाद्यादि ॥ मकुदानवि
 य ॥ गुनर्नधय ॥ दकाभि मयारुगवन अस्मिसेनिहिगारुव सिधनधय
 क ॥ घुकाभि मयारुगवन मयिसेनिगोर्हवा मकुदानयादकला वकु

विद्या ॥ कपयाककाधनकाश सिहिलय ॥ थाकाहिममुलाधलक पाता
 ने ॥ सुगाकब विसर्जन ॥ सघीमहनि कथ ॥ दकना ॥ आ कलहिथ ॥ सम
 याचक ॥ गलचक ॥ नृनिपयस हिखकविधिसमाफ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

नमः शिवाय

